राजपूत वीरगाथा का दूसरा अङ्क ।

राव कल्लाजी रायमलोत ।

पण्डित रामदीन पाराशर ।

राजपूत वीरमाला का दूसरा अङ्क

रणबङ्का राठौर ।

राव कल्लाजी रायमलोत ।

पण्डित रामदीन पाराशर

(जसवन्तनगर ज़िला इटावा निवासी)

डेपुटी इन्स्पेक्टर शिक्षाविभाग, आनरेरी सेक्रेटरी दरबार
लायब्रेरी और सुपरिण्टेण्डेण्ट महकमे तवारीख़

राज्य किशनगढ़ द्वारा

सम्पादित और प्रकाशित

सम्वत् १९७६
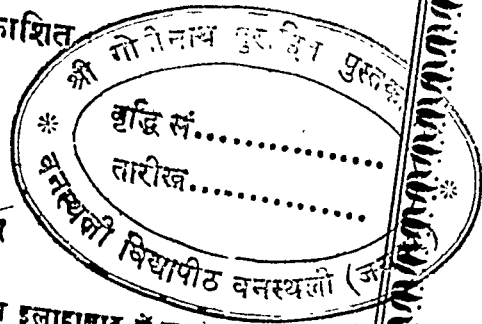
विश्वम्भरनाथ भार्गव के प्रबन्ध से स्टैन्डर्ड प्रेस इलाहाबाद में छापा गया ।

[...बार] [१०००

ठाकुर ॲाणंदसिंहजी लाड़नू ।

The Standard Press, Allahabad.
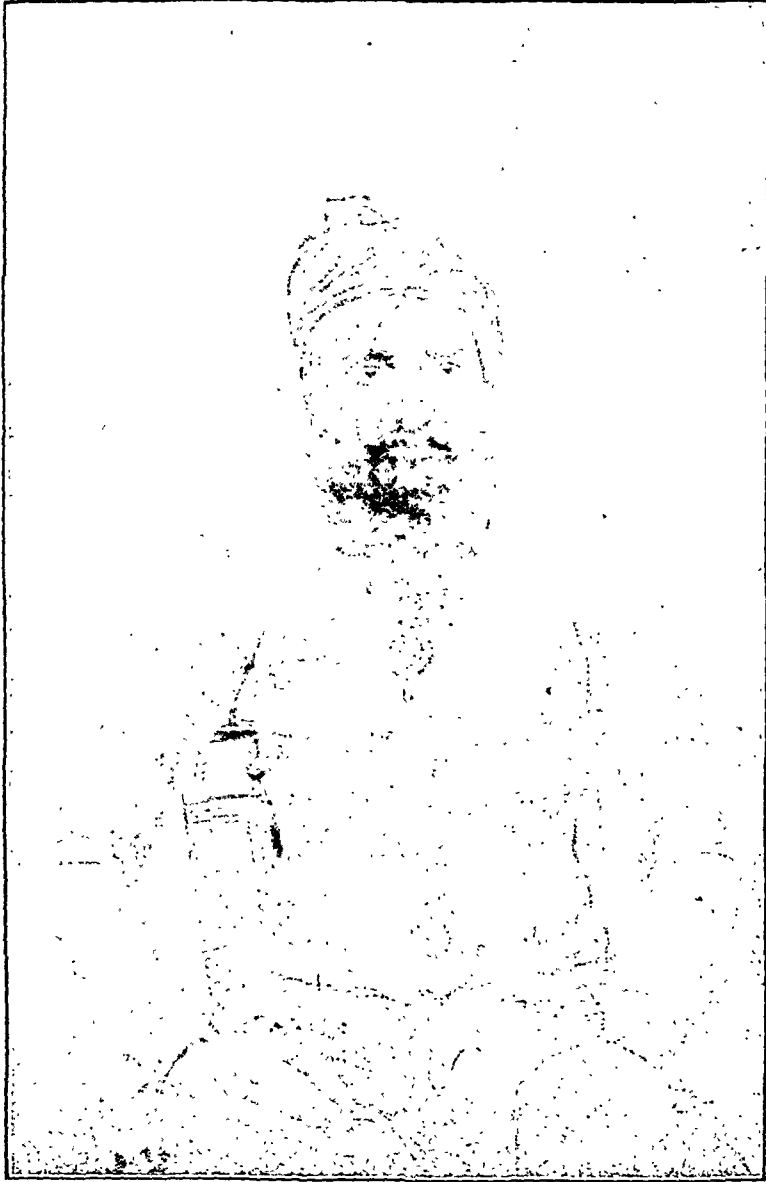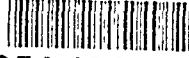
समर्पण ।

श्रीमान् राष्ट्रवर अणदासिंहजी, ठाकुर साहब
लाड़नू की स्वर्गीय आत्मा
को
उन्हां के पूर्वज परम देशभक्त, दृढ़प्रतिज्ञ, कर्मवीर,
राव कल्लाजी रायमलोत
की
पार्थिव कीर्ति स्वरूपा
ऐतिहासिक घटना से पूर्ण
यह जीवनचरित्र
परमभक्ति और प्रेम के साथ
समर्पित है ।

समर्पक रामदीन पाराशर ।

भूमिका ।

पश्चिमी सभ्यता और विद्या बुद्धि के प्रचार के साथ २ अब पठित समाज की रुचि शनैः २ तोता मेना के क़िस्से कहानियों और ऐयारी तिलस्म से भरे हुए उपन्यासादि से उचट कर एतिहासिक ग्रन्थों की ओर भी कुछ ढुल पड़ी है और एतिहासिक घटनाओं को लेकर हिन्दी के कई एक गण्य मान्य लेखक अच्छे २ ग्रन्थ लिखकर हिन्दी साहित्य की ख़ूब पुष्टि कर रहे हैं यह देश और समाज के अभ्युदय का शुभ लक्षण है ।

इस विषय में हमारा राजस्थान का इतिहास ख़ूब भरा पूरा है । राजपूताने को वीर नर रत्नों की खान कहें तो कुछ अत्युक्ति न होगी क्योंकि एक कवि का बचन है :—

"वीर प्रसविनी वीर भूमि यह वीरहि प्रसव करै"

हमारे चरित्र नायक कल्लाजी इसी स्थान के एक नर रत्न हैं । इस वीरवर का चरित्र प्रकाशन करने का सारा पुण्य एक राठौर सज्जन को है कि जिनकी प्रेरणा से यह लिखा गया था मैं तो एक निमित्त मात्र हूँ यहाँ पर मैं अपने

मित्र पं० श्रीचन्द्रधरजी गुलेरी संस्कृताध्यापक मेयो कालेज अजमेर को भी धन्यवाद देता हूँ क्योंकि आपने परिश्रम उठाकर एक बार इसे देखा है। और लींड़ी ठाकुर सावंतसिंहजी की गुणग्राहकता को भी नहीं भूल सकता कि जिनकी अमूल्य सहायता से आज मैं यह पुस्तक प्रकाशित करने में समर्थ हुआ हूँ। यदि हमारे वीर क्षत्रियों ने इस पुस्तक की थोड़ी भी क़दर की तो हम इसी प्रकार अन्यान्य क्षत्रिय वीरों के चरित्र भी राजस्थान के इतिहास में से खोज २ कर प्रगट करने का साहस करेंगे।

निवेदक

रामदीन पाराशर।

राव कल्लाजी रायमलोत।

The Standard Press, Allahabad.

रणबङ्का राठौर
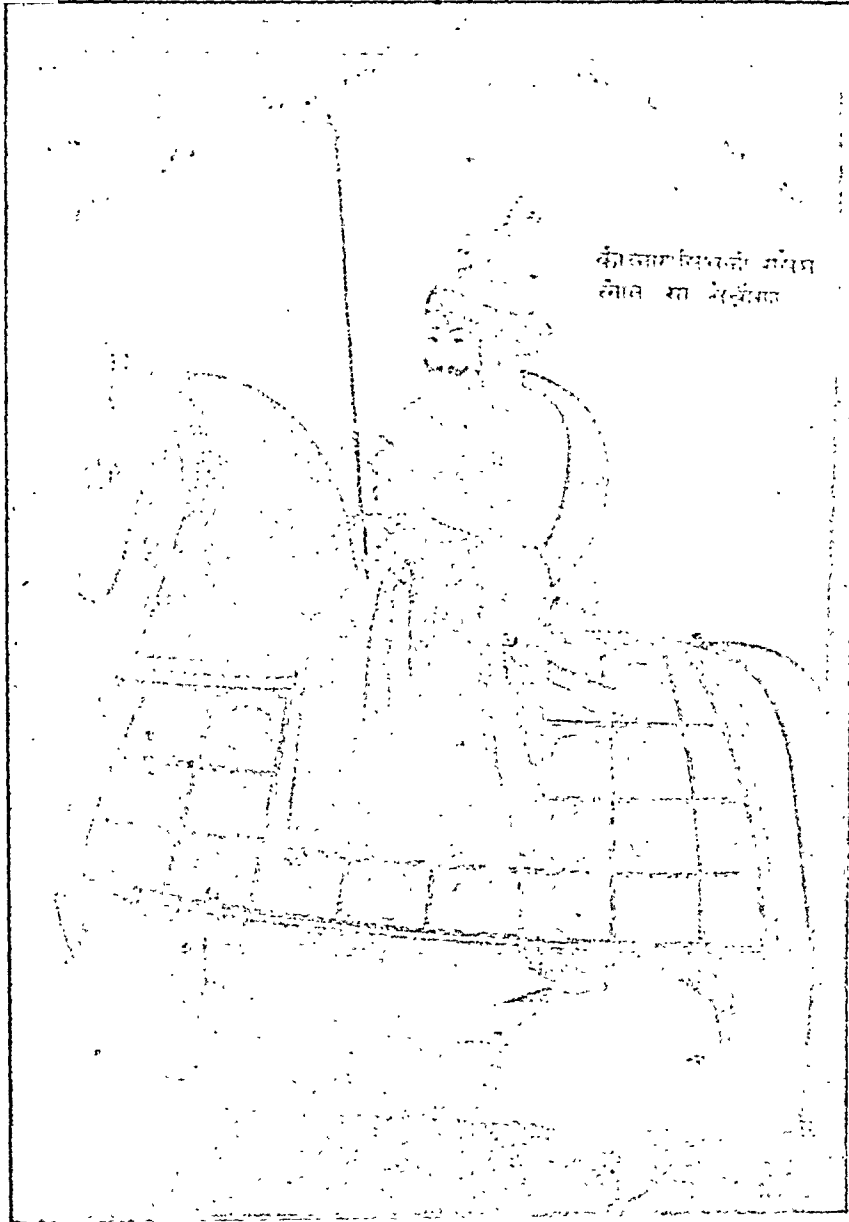
राव कल्लाजी रायमलोत।

इस परमेश्वरीय सृष्टि में विद्या, बुद्धि, धन, बल, आदि करके प्रसिद्ध पुरुष प्रत्येक देश और प्रत्येक समाज में समय पाकर एक न एक हुआ ही करते हैं। परन्तु अपनी मातृभूमि और ज्ञाति के गौरव के लिये प्राण निछावर करने वाले वीर पुरुष थोड़े ही जन्म लेते हैं। परम्परा से मनुष्य मात्र ऐसे वीर पुरुषों के गुण गाते आये हैं। और स्थान २ पर ऐसे वीर पुरुषों की छतरियाँ, देवल, चबूतरे, रोज़े आदि इस धराधाम के छाती पर खड़े हुए आज भी उनकी कीर्ति को दिगन्त में फैला रहे हैं।

आज हम आप को माड़वार प्रान्त के एक ऐसे ही वीर पुरुष का हाल सुनाते हैं। सम्बत् १६१६* में मारवाड़ के

* लाड़नू की एक ख्याति में राव मालदेवजी का स्वर्गारोहण सं० १६१७ में लिखा है। परन्तु अकबर नामें और जोधपुर के इतिहास में उक्त सं० १६१६

प्रतापी राजा मालदेवजी के मरने पर मारवाड़ का अधिकांश देश मुग़लों के आधिपत्य में चला जाने से जोधपुर राज्य, यवनों के अत्याचार का घर हो रहा था। सब भाई बेटों में विरोध की अग्नि फैल कर जो जहाँ था वह वहीं स्वतंत्रता की दम भर अपनी डेढ़ चाँवल की खिचड़ी अलग ही पकाता था उदयसिंह प्रभृति प्रतिभाशाली राजवंशी पुरुष अपने से छोटे चंद्रसेन को मारवाड़ का राज्य मिलने से ईर्षावश अपनी जमैयत के लोगों समेत शत्रुपक्ष से जा मिले थे। भिन्न २ ठिकानों में परस्पर प्रेम होने की जगह द्वेष और अविश्वास का राज्याधिकार हो रहा था। राव चन्द्रसेनजी राजा होने पर भी सरदारों व राज्य कर्म्मचारियों की फूट से राज्य का यथा योग्य प्रबन्ध नहीं कर सकते थे और स्वार्थी लोगों के हाथ की कठपुतली बन रहे थे और मारवाड़ आपस की लड़ाई झगड़े का विग्रह घर बना हुआ था। भारत के समस्त बड़े २

ही दर्ज है। पालनपुर के इतिहास में जो चंद्रसेन का बादशाह के डर से मेडते में मिर्ज़ा के पास भाग कर चला जाना लिखा है सो यह बात चन्द्रसेन के लड़कपने की है। क्योंकि अपने पिता राव मालदेव की आज्ञानुसार सं० १६१८ में इन्होंने मिर्ज़ा को अपने पक्ष में मिला कर जालोर फ़तह करने का यत्न किया था और जब सं० १६१९ में राव मालदेवजी का स्वर्गारोहण हुआ तब यह जालोर में ही थे।

भूपाल अपनी चिर संचित स्वाधीनता मुगलों के हाथ बेच सम्राट अकबर के पादसेवी बनने को उधार खाये फिरते थे। ऐसी स्थिति में जब कि कई एक बड़े २ राजा महाराजा अपने मान मर्यादा वंश गौरव आदि क्षत्रियोचित धर्म्म पथ को त्याग कर स्वार्थवश मुगलों से सारे ससुरे का सम्बन्ध जोड़ बैठे थे। ऐसे कठिन समय में अकबर जैसे प्रबल बादशाह से विरोध करके अपने मान मर्यादा वंश गौरव आदि को मरण पर्य्यन्त तक निभाना कुछ हँसीखेल नहीं है? पर वाहरे! कल्याणसिंह! तैंने इतने विपरीत कारण होते हुए भी एक अपनी जान के भरोसे इतने बड़े सम्राट के साथ रार ठान उसे अन्त समय तक निबाहा। आज तुम नहीं रहे पर तुम्हारी उज्वल कीर्ति से राजस्थान का घर २ दी दीप्तिमान है। तुम्हारी उस अतुल वीरता के गीत चारण आदि लोगों की ज़बान पर आद्यावधि विराजमान हैं और तुम मर कर भी अभी जीते हो। सिवाणे के क़िले में देवताओं की तरह पूजे जाते हो तुम्हारे नाम के प्रभाव से कितनेक मनुष्य अति कठिन पीड़ा से मुक्त होते हुए देखने में आये हैं। सहस्रों यात्री दूर २ से चल कर तुम्हारी यात्रा निमित्त सिवाने के क़िले पर आते हैं।

इससे अधिक क्या होगा कि तुम्हारे किये नियमानुसार तुम्हारे निज के वंशज उस स्थान पर नहीं जा सकते हैं पर और सब आते हैं और साल में एक बड़ा मेला भरता है और तुम्हारे प्राणों के शत्रु काका उदयसिंहजी के एक वंशज ही तुम्हारे गुणों को संसार में प्रसिद्ध करने के लिये आज यह पुस्तक प्रकाशित करा रहे हैं।

वीरबर राव कल्लाजी के पास न तो प्रचुर धन था न वह किसी बड़े राज्य के मालिक ही थे। महाराणा प्रताप की तरह या वीरबर दुर्गादास की तरह सारा देश उनके पक्ष में भी नहीं था किन्तु खास घर के लोग ही उनके प्राणों के ग्राहक हो रहे थे। भारत के चक्रवर्ती सम्राट अकबर के आगे यह महा मरुभूमि के एक रेत के कण के बराबर भी तो नहीं थे तिस पर भी अकबर को इनके दबाने के निमित्त कैसे २ छल प्रपंच रचकर युद्ध की बड़ी तैयारी करनी पड़ी।

कल्याणसिंह राय मलोत जो राजस्थान में कल्लाजी के नाम से प्रसिद्ध हैं मारवाड़ के अन्तर्गत सिवाणा के राजा थे। सिवाणा इनके पिता रायमलजी को अपने बाप राव मालदेव-जी से जागीर में मिला था। वही सावण सुदि १५ सम्बत्

१६२७ को रायमलजी को १२५ गांवों के साथ बादशाह अकबर से इनायत हो गया।

हमारे बहुत खोजने पर भी रावकल्लाजी का ठीक जन्म सम्बत् नहीं मिला पर इनका जन्मकाल सम्बत् १६०८ और १६१२ के बीच का निर्विवाद है। आपका जन्म जोधपुर के राजकुल में वीरमाता हीरकुँवरि के गर्भ से हुआ था। हीर कुँवरि सिरोही के राव सुरतान+ देवड़ा की बेटी और राव लाखाजी की पोती थीं। कल्लाजी के पिता का नाम रायमल था। रायमल जोधपुर के प्रसिद्ध महाराजा मालदेवजी के तीसरे* पुत्र थे और नरवर के राजा के भानजे थे†

रावकल्लाजी बचपन से ही बड़े वीर थे, आपकी सूरत शकल चाल ढाल से वीरता तो मानो टपकी पड़ती थी। इन्हीं कारणों से रावमालदेवजी आपको बहुत चाहते थे और प्रायः अपने पास ही रखते थे। कुछ तो यह स्वतंत्र स्वभाव

+ इनका दूसरा नाम विजयसिंह था।

* कोई २ इनको दूसरा पुत्र भी मानते हैं पर चन्द्रसेनजी से बड़े अवश्य थे।

† एक ख्याति में राव कल्लाजी को झालामानसिंह का दोहिता भी लिखा है।

के ठेठ ही से थे और कुछ महाराजा मालदेवजी के समीप में रहकर और भी स्वेच्छाचारी हो गये थे । भय तो आप जानते ही नहीं थे । राव मालदेवजी की शिक्षा से यवनों से इन्हें जो घृणा होगई वह तो फिर मरण पर्य्यन्त तक निकली ही नहीं पिता के हठ एवं दबाव से कुछ काल तक आप बादशाही दरबार में रहे भी पर स्वतन्त्र स्वभाव होने के कारण वहाँ इनकी पटी नहीं । अकबर का बड़े से बड़ा मन्सब माही मरातिब आदि कोई लोभ लालच इनको अपनी टेक से चलायमान नहीं कर सका । माता का प्रेम, भाई बन्धुओं का स्नेह पिता का डर, महाराजा उदयसिंहजी आदि का विपरीत भाव बहुत से विघ्न इनके आड़े आये पर इन्होंने एक की भी परवाह नहीं की । अकबर ने कई बार मारवाड़ का राज्य आपको उन निंदित शर्तों पर जो उस समय के राजाओं से की जाती थीं देना चाहा पर आप उस प्रकार लेने पर कभी सहमत नहीं हुए और अपने पिता तथा काका सबके कोप भाजन होकर बादशाह से बिगाड़ कर बिना सीख किये सिवाणे चले आये और मरण पर्य्यन्त तक अपने हठ को नहीं छोड़ा ।

पूर्व प्रथानुसार राव कल्लाजी के भी कई विवाह हुए थे आपका पहिला विवाह सोजत के ठाकुर करणसिंह जी की बेटी हुलियाणीजी के साथ हुआ। जिनके गर्भ से नरसिंह दास, ईश्वरदास, और भाकरसिंह का जन्म हुआ। दूसरा नरेणा के खँगारोतों के, तीसरा राजगढ़ के गोड़ों के चौथा वसी के शेखावतों के। इन शेखावतजी से सूरदास, माधोदास और सगणजी तीन पुत्र प्रगटे, पाँचवाँ विवाह जैसलमेर के भाटियों के सहसमल की बेटी और राजा मालदेवजी की पोती के साथ हुआ* छठा विवाह बूँदी के हाड़ा राजा भोज की कन्या और राव सुरजन की पोती भानकुँवरि के साथ हुआ। इस विवाह की बाबत प्रसिद्ध है कि बूँदी राजकुल की कन्या पाने को शाहंशाह अकबर बड़ा उत्सुक था। जब लगातार प्रयत्न करने पर भी उसका यह कार्य्य सिद्ध नहीं हुआ तब एक दिन दूसरे राजाओं के संकेत से दरबार आम में बैठे हुए राजा भोज से अपना विवाह का उद्देश्य प्रगट किया। उस समय राजा भोज बड़े संकट में पड़ा और तो कोई उपाय

* कहते हैं कि भटियाणी जी की सगाई दिल्ली किसी तैमूरवंशी शाहज़ादे के साथ हुई थी। उस शाहज़ादे को विवाह के पूर्व मार कर यह विवाह आपने ख़ुद कर लिया।

सूझा नहीं झूँठमूठ अपना पीछा छुड़ाने को बोला "जहाँ पनाह की आज्ञा शिरोधार्य्य है पर यह सम्बन्ध हो चुका है" सम्राट अकबर यह भली प्रकार जानता था कि समकालीन राजा तो सब इस वक़्त यहां उपस्थित हैं तब विवाह इन्हीं के साथ हुआ होगा अतएव लाल पीली आँखें करके बोला कि "अच्छा बतलाओ वह सम्बन्ध किसके साथ हुआ है ? इस प्रश्न को सुनते ही राजा को काठ मार गया काटो तो शरीर में कहीं खून नहीं, क्योंकि राजकन्या का वास्तव में अभी कहीं विवाह नहीं हुआ था सो सब राजाओं की ओर आर्त्त दृष्टि से देखने लगा कि कोई कुछ संकेत करै तो उसका नाम बोल दूँ। पर उस समय आमख़ास में उपस्थित सब राजाओं ने डर और लज्जा से अपनी २ गरदनें नीचे को कर लीं। पीछे जब राव कल्लाजी की ओर राजा भोज की दृष्टि गई तो उन्होंने मूछों पर हाथ फेर कर संकेत किया कि आप हमारा नाम ले दें अब राव कल्लाजी का इशारा पाकर राजा भोज के प्राणों में प्राण आये और बोले "ग़रीब निवाज सिवाणे के राव कल्याणसिंह जी के साथ यह सम्बन्ध हुआ है झूँठ मानें तो आप उनसे रूबरू पूछ लें इस समय वह यहीं

मौजूद हैं अकबर ने क्रोध भरी दृष्टि से राव कल्लाजी की ओर मुख़ातिब होकर पूछा । क्या सचमुच यह सगाई तुम्हारे साथ हुई है ? कल्याणसिंह बोले जब लड़की का पिता ही जहाँपनाह के आगे इक़रार करता जाता है तब और प्रमाण की क्या आवश्यकता है । इस पर बूँदी की यह सगाई छोड़ देने के लिये राव कल्लाजी पर बहुत कुछ दबाव डाला गया कि हम तुम्हारा कुरब, मन्सब, जागीरादि सब कुछ बढ़ा कर किसी बड़े राजा के यहाँ सम्बन्ध करवा देंगे । पर यह वीर पुरुष अपने काका उदयसिंह आदि बूढ़े बड़ों के समझाने पर भी सगाई छोड़ देने पर राज़ी नहीं हुआ । तब बादशाह ने इधर अपना कार्य्य बलपूर्वक साधनार्थ उन्हें राजा उदयसिंह के साथ किसी मुहिम पर भेज दिया । पर राव कल्लाजी बूँदी रावजी के साथ विवाह का गुप्त परामर्श कर मार्ग में से ही एक फ़ौज के अफ़सर को मार कर पाँच सौ सवारों को साथ लेकर बूँदी पहुँचे और वहाँ भानकुँवरि के साथ विवाह कर नव दम्पति सिवाणा आगये ।

जब यह ख़बर बादशाह को लगी तो वह अपना सा मुँह लेकर रह गया और बड़ा लज्जित हुआ । फिर बूँदी रावजी

एवं राजा उदयसिंह आदि पर बहुत चिढ़ा। उसी समय मिर्ज़ा ख़ाँ और राजा उदयसिंह की मातहती में एक बड़ा लश्कर कल्याणसिंह को मय हाड़ी रानी के जीता पकड़ लाने के लिये सिवाणे पर भेजा गया।

तदनुसार मिर्ज़ाख़ाँ और उदयसिंह ने एक बड़े भारी लश्कर के साथ सिवाणे पर चढ़ाई की और रेगिस्थानी मार्ग की आफतें झेलते तथा मारवाड़ के सरकश राठौरों से लड़ते झगड़ते वे बमुश्किल सिवाणा पहुँचे और उन्होंने सिवाणे के गढ़ तथा बस्ती का घेरा देकर लड़ाई शुरू की। इस समय राव कल्लाजी ने हाड़ी रानी भानकुँवर को बूँदी भेज दिया था। बूँदी को प्रस्थान करते हुए हाड़ी रानी ने पूछा था कि अब पुनः आपके दर्शन कब होंगे इस पर कल्याणसिंहजी ने कहा कि जिस प्रकार "हमारे पूर्वज जगमालजी* घेरे से निकल कर सावण की तीजों पर तुम्हारी पूर्वजा फूँफी से मिले थे उसी प्रकार मैं भी अगर जीता रहा तो सावणसुदि तीज के दिन बूँदी आकर तुमसे मिलूँगा और हाड़ी रानी भी यह प्रण

* जगमाल जी के विषय में प्रसिद्ध है कि इनका प्रथम विवाह बूँदी की राजकुमारी से हुआ था। पर जब इन्होंने मुसलमानों को हिन्दुओं की स्त्रियाँ छीनते

कर पीहर† चली गईं कि यदि आप सावण सुदि २ को अर्द्ध रात्रि तक बूँदी न पहुँचेंगे तो मैं नाथ को रणस्थल में काम आया समझ यह नश्वर शरीर परित्याग कर नाथ की अनुगामिनी बनूँगी ।

बादशाही फ़ौज को घेरा डाले लगभग छः महिने होगये पर क़िला फ़तह नहीं हुआ यों करते करते सावण सुदि २ का दिन आगया और गढ़ में लड़कियों को तीजों के गीत गाते हुए देख इनको अपने बूँदी जाने का स्मरण हुआ । अब क्या था उसी समय एक गुप्त मार्ग द्वारा उस कड़े घेरे के अन्दर से निकल कर किले की रक्षा का सब भार अपने वीर पुत्र नरसिंहदास और कल्याणसिंह भाटी इत्यादि सुभटों पर छोड़कर

† बाप के घर यानी मायके ।

झपटते देखा तब यह भी उसके वैर में गुजरात के सूबेदार की लड़की को मय दश पाँच मुसलमानों की अन्य लड़कियों के हर लाये । जोकि राजपूताने में गिन्दोली के नाम से मशहूर है । मुसलमानों ने इस ख़बर को सुनकर जगमालजी का पीछा किया और मार्ग में ही राजपूतों को जा घेरा । इस लड़ाई में गिन्दोली का भाई घुड़लेखाँ जगमालजी के हाथ से मारा गया । इस लड़ाई की यादगार में कहीं तीजों के अवसर पर और कहीं चैत्र तथा क्वार के महीनों में नवरात्रि के अवसर पर लड़कियाँ एक छेदेदार घड़े में दीपक रखकर उसे अड़ोस पड़ोस के घरों में गीत गाती हुई घुमाती हैं । युक्त प्रदेश में इसे झिंजिया कहते हैं और क्वार की पूर्णमासी के दिन टेसू के साथ झिंझिया का विवाह कर लोग खुशी मनाते हैं ।

एक एराकी घोड़े पर चढ़कर आप बूँदी को चल पड़े। ऐसी हरबड़ी में भी मार्ग में एक मुग़ल सरदार द्वारा सताई हुई अबला का उद्धार करते हुए आप बनास नदी के किनारे पहुँचे। उस समय दो पहर के पाँच बजे होंगे और ज़ोर की वृष्टि होने के कारण बनास नदी अपने पूर्ण वेग के साथ बह रही थी। अब क्या करैं पार जाने का और कोई उपाय न देख हनुमानजी के इष्ट का स्मरण कर नदी में घोड़ा डाला परन्तु बीच नदी में जाकर वह घोड़ा इनकी रान से निकल गया। परन्तु तैरते डूबते ज्यों त्यों कर के उस इष्ट के प्रभाव से आप नदी के दूसरे किनारे पर जा लगे। जब होश हुआ तो देखते क्या हैं कि घोड़ा नहीं है और बूँदी अभी दश बारह कोस है पैदल चलकर भी तो नहीं पहुँच सकते इतने में पास

इसी बात से क्रोध में आकर मुसलमानों ने खेड़ पर चढ़ाई की। तब जगमालजी ने हाड़ी रानी को बूँदी भेज दिया और सावणसुदि तीज को स्वयं बूँदी आकर मिलने का उन्हें वचन दे दिया। इसके बाद बादशाही फ़ौज ने खेड़ को घेर लिया और यह युद्ध में लगे रहने से बूँदी जाना भूल गये और जब सावणसुद तीज के केवल दो दिन रह गये तब लड़कियों को तीजों के गीत गाते हुए देखकर इन्हें अपने प्रण की याद आई और उसी समय क़िले के एक गुप्त द्वार की राह से बाहर निकल कर जगमालजी बूँदी को चल पड़े। मार्ग में इन्हें एक गाँव में कुछ यादव क्षत्रियों ने (कोई २ कहते हैं कि यह लोग भूत थे) रोक कर इनके साथ अपनी कन्या विवाह देने का हठ किया तो इन्होंने उनसे अपने युद्ध में मदद देने

ही घोड़ों का एक क़ाफ़िला इनको दिखलाई दिया। क़ाफ़िले का चारण सरदार इनकी जान पहिचान का था सो उससे एक दूसरा घोड़ा हाथ उधारू लेकर एन उस समय पर बूँदी पहुँचे जब कि हाड़ीजी अपने प्राण त्याग की पूरी २ तैयारी कर चुकी थीं।

चार पाँच दिन बूँदी रावजी के मिहमान रह पीछे आप हाड़ीजी सहित सिवाणा में आगये। इस प्रकार सिवाणे के घेरे को जब बहुत अर्सा होगया तब अकबर बादशाह ने दिल्ली से और कुमुक भेजकर ताकीदी का फ़रमान भेजा। जिस पर राजा उदयसिंह ने अपने दो राजकुमारों की मातहती

का प्रण करवा कर वह विवाह कर लिया और विवाह हो जाने के पीछे तुरन्तही बूँदी को चल पड़े। जब जगमालजी बूँदी के निकट पहुँचे तो उसके कुछ पहिले बूँदी में ऐसी घटना हुई कि इनकी हाड़ी रानी एक झरोखे में बैठी हुई आपके आने की राह देख रही थीं कि यकायक निद्रा आगई और निद्रा की दशा में झरोखे से नीचे गिर गईं झरोखे के नीचे झाड़ी में एक नाहर छिपा हुआ बैठा था वह इन्हें उठाकर जंगल की ओर ले चला संयोग से उसी राह से जगमालजी आते थे मार्ग में उनकी नाहर से भेंट होगई और नाहर को मारकर हाड़ी रानी का उद्धार किया और दोनों ने एक दूसरे को पहिचाना। हाड़ी रानी की ज़ुबानी नाहर के मुँह में पड़ने का वृत्तान्त सुनकर आप उनको लेकर क़िले में गये और चार पाँच दिन बूँदी में रहकर फिर आप खेड़ में चले आये।

में रावल मेघराज, राठौर नरहरदास, राठौर बेरीसाल, राठौर किशोरदास, महेशख़ाँ जालोरी, भोजराज देवड़ा, भंडारी मन्नूजी वग़ैरह को मय अपनी २ जमैयत के सवारों के और बुला भेजा। इन सबने अगली फ़ौज के साथ मिल कर क़िले पर एकदम बड़ा प्रबल आक्रमण किया। पर क़िला हाथ नहीं लगा और रात्रि को कल्लाजी के अचानक आपड़ने से इन सबके पैर उखड़ गये और भागकर नागोर पहुँचे। इस लड़ाई में दोनों ओर के बहुत आदमी मारे गये तथा राजा उदयसिंह के दोनों राजकुमार पकड़े गये, जिनको राव कल्लाजी ने आदर पूर्वक राजा उदयसिंहजी के पास पहुँचा दिया।

इस हार पर फ़ौज मुसाहिब को बड़ी लज्जा आई और अपनी तीन तेरह फ़ौज को फिर इकट्ठी कर तथा दिल्ली नागोर, मेडता और जालौर से अच्छी कुमुक आजाने से सिवाणे के क़िले को पुनः जा घेरा और प्रण किया कि आज मैं क़िला फ़तह करने के बाद ही खाना खाऊँगा। पर इस दिन भी क़िला बिना फ़तह किये ही लश्कर को अपना सा मुँह लेकर लौट आना पड़ा और फ़ौज मुसाहिब के न खाने से उस दिन किसी ने कुछ नहीं खाया। तब सब की सम्मति से यह स्थिर

हुआ कि अगर ऐसा ही प्रण है तो एक काग़ज़ का सिवाणा बनाया जावे और उसे फ़तह कर फ़ौज मुसाहिब खाना खालें। पर वाहरे राठौर ! तैंने काग़ज़ का सिवाना भी अपने जीते जी फ़तह नहीं होने दिया । जिस समय लश्कर के सब लोग इस नये शुग़ल में मशग़ूल थे राव कल्लाजी अपने कुछ आदमियों के साथ बादशाही फ़ौज पर ऐसे आन पड़े कि मुग़लों के होश उड़ गये । और जिधर को जिसका मुँह उठा वह उधर ही को भाग निकला । इस हल्ला में राजा उदयसिंह के उन राठौर सरदारों ने भी राव कल्लाजी का साथ दिया कि जो ख़ाली दिल्लगी के लिये उस काग़ज़ के क़िले पर दुश्मन की जगह खड़े किये गये थे ।

इस घटना के कुछ दिन पीछे सोड़ पुरोहित, टोगसा नाई, और देधड़ा ढोली इन तीन देश द्रोहियों की मिलावट से मगशिर बदि ७ सं० १६४८ को क़िला फ़तह हो गया और राव कल्लाजी केशरिया वस्त्र पहिन कर क़िले से निकल बड़ी बहादुरी के साथ हमराहियों समेत काम आये । राजस्थान में प्रसिद्ध है कि आपका बिना सिर का धड़ कई क़दम तक तलवार चलाता रहा और अन्त को ज़मीन फट गई उसमें

घोड़ा समेत आप सदा के लिये समा गये* और गढ़ में की स्त्रियाँ अपनी पूर्व प्रतिज्ञानुसार चिता रच कर यवनों के पहुँचने के पहिले २ जल मरीं।

राव कल्लाजी के मरने के उपरान्त नरसिंहदास; ईश्वरदास वग़ैरह जो उस समय सोजत में थे कुछ दिन तो पूर्वत मुग़लों के साथ लड़ते रहे। पीछे राजा उदयसिंह जी ने नागोर के परगने में खाटू १२५ गावों के साथ नरसिंहदास को और मेडते के परगने में रायण ईश्वरदास को देकर दोनों का सम्राट अकबर के साथ मेल करवा दिया। पर बनी नहीं तब मय अपने कबीलों के दक्षिण में बादशाह के पास गये† और वहाँ तुर्कों से तकरार हो जाने पर लड़कर काम आये। अब इनके वंश में मारवाड़ में लाड़नू, लेड़ी, गोराऊ और बलदूँ बड़े ठिकाने हैं।

* कोई ऐसा भी कहते हैं कि इस लड़ाई में मोटा राजा उदयसिंह जी नहीं थे कुँवर भूपत थे।

† दक्षिण में बादशाह के पास जाना लिखा है सो अकबर बादशाह तो उस वक़् लाहोर में थे और उनसे अब इनका कुछ काम भी नहीं रहा था इस लिये दक्षिण में अहमदनगर या बीजापुर वालों के पास गये होंगे। क्योंकि वह अकबर बादशाह के तावे नहीं थे और अपने को दक्षिण का स्वतन्त्र बादशाह समझते थे।

अब हम राव कल्लाजी विषयक कुछ समकालीन कविताएँ और गीत जो राजस्थान में बहुत प्रसिद्ध हैं यहाँ देकर अपने इस लेख को समाप्त करते हैं। यद्यपि इन गीतों को राजस्थान के लोगों के सिवाय दूसरे लोग कम ही समझेंगे। परन्तु तीन सौ साढ़े तीन सौ वर्ष पूर्व की एक ऐतिहासिक घटना को लिये हुए होने के कारण यह गीत बड़े महत्व के हैं और इधर के लोग अद्यापि उन्हें बड़े प्रेम के साथ पढ़ कर रणमदोन्मत हो जाते हैं। दूसरे लोगों को इनके पढ़ने में कुछ रस मिले या न मिले परन्तु बहुत प्राचीन बोली भाषा में होने के कारण उनके लिये कौतूहल वर्द्धक तो अवश्य होंगे।

वीरवर राव कल्लाजी का उपरोक्त चरित्र हमने नाटकाकार भी लिखा है जो रण केशरी महाराणा प्रताप के उज्वल चरित्र से किसी बात में कम नहीं है और पुलिसकेप साइज़ के लगभग डेढ़ सौ पृष्ठों में पूर्ण हुआ है। यह जीवन चरित्र तो उसकी एक प्रस्तावना मात्र है कि जिससे नाटक की घटना समझने में पाठकों को विशेष उलझन न हो। यदि भगवान ने चाहा तो अबके हम उसे ही लेकर उपस्थित होंगे।

गीत आसिया चारण दूदाजी ग्राम सिरोहीकृत ।

(१)

बड़ चड़ कह पतशाह बंदीतो, माण मँडोवर राख मलीतो ।
कलो भलो रजपूत कहींतो, जिण अवतार लगे जस जीतो ॥१॥
प्रगटा दल आरँभ पतसाही, सिध नारियणाँ सूँ बीड़ौ साही ।
वदियाँ वैण जिके निरबाही, गढ़ सवियाण कला पिंड़गाँही ॥२॥
थल गह गरट तलैटी थाणों, राव अग्राज करै रीसांणो ।
करड़ा बचन कहै किलियाणों, सिर पड़ियाँ देसूँ सवियाँणो ॥३॥
तूटी छमछर बरस तियालै, बढ़्यो पड़्यो धर खेद विचालै ।
ऊदो राव दुरँग ऊधालै, रायमलोत दुरँग रखवालै ॥४॥
सूजा हेरो डूँचिये साबल, चावो विढण अणखिले नहचळ ।
दीठाँ काल रोहियो अरिदल, चढियो गढाँ जूझवा चंचळ ॥५॥
भारतसिंह जिसा भूपालाँ, साच कलह जद ऊपर मालाँ ।
रँग कहतो आयौ खताल़ाँ, कलियो मूँह चढै करमाँलाँ ॥६॥

१—कबूल किया । २—फ़ौज । ३—राजाओं । ४—कहे हुए । ५—शरीर । ६—सिवाणा मारवाड़ में एक बड़ा गांव है । ७—गढ़ । ८—सूजाजी का पोता । ९—काटना । १०—क़िले का नाम । ११—तलवारें ।

जिस रावल दूदो जेसांणें[1], सातळ सोम मुवो सवियाणे ।
निहचल राव चूँड नागांणे[2], कीधो मरण जिसो कित्तियाणे ॥७॥
जुड़ि घड़ कान्ह मुवो जालंधर, थाट[3] विडार हमी[4] रणथंभर ।
अँगते लाज अणखलाँ[5] ऊपर, कलियो जूझ मुवो गज केहर ॥८॥
पावैगढ़ जूँझार पताई, सक जयमल चित्तोड़ सवाई ।
लाखो भड़ सिर माँड लड़ाई, बाघहरौ[6] लड़ियौ बरदाई ॥९॥
हाथी सहर माँण हाथालो, कुंभ गागरण माँझी कालो ।
आबू सिखर मुवो अड़सालो[7], सुणियो जेम कलौ सु पखालो[8] ॥१०॥
विढ भोजराज मुवो वीकांणे[9], पाटन अरजन जेम प्रमाणे ।
बरसलपुर खेमाल बखाणे, सांकौ[10] जेम कला सवियाणे ॥११॥
छल जूनैगढ़ सोम छछोहे, लुद्रवै भीम मुवो चढि लोहे ।
रहियो भाँण मँडोवर रोहे, सिर सिवियाण कलामृत सोहे ॥१२॥
अचल तिलोक सिंध रण आगे, जुड़ि गूगोर मुवो छल जागे ।
लाज जिकाँ सिर अंबरं[11] लागे, खेड़ नरेस बाजियो खांगे[12] ॥१३॥
नहचल बात कलो[13] निरबावे, चावा रावाँ बोल चढ़ावे ।
रवि ससि हर लग बात रहावे, इन्द्रसभा बिच बैठो आवे ॥१४॥

१—जैसलमेर । २—नागोर । ३—समूह । ४—हमीरसिंह । ५—क़िले का नाम । ६—बाघसिंह का पोता । ७—अड़सी जी । ८—वात । ६—बीकानेर । १०—बड़ायुद्ध, जोहर । ११—आकाश । १२—तलवार । १३—कल्यानसिंह ।

(२)

चहु आँणा पछै चढ़ रिणाचाचर, मनजो तूँ न करत मनमोट ।
सलखाँ तणो[1] किसू साराहन, किरतब कला अणकलोकोट ॥१॥
माळ लियौ जदराण समूओ, भेळाँ गहण पतौ न मुओ ।
रायमलोत मरण राठोड़ाँ, हाँणरली[2] बाखाण हुओ ॥२॥
सातल सोम पछै सवियाँणो, कमध[3] दीध[4] निकलंक करः ।
अवँरदीह[5] कुळ तणौ ओलंभौ[6], मालहरै[7] टालियौ मरः ॥३॥
खाधी धोर तणाँ खेड़ेचाँ[8], माथै रहत घणा दिन मोस ।
मुरधर[9] मंडल तूझ तणे मृत, देता दुरँग[10] सटलियौ दोस ॥४॥

गीत साँदू चारण मालोजी ग्राम भदोरीकृत ।

(१)

केवाणाँ[11] भुज वाम सेखकर, भारत[12] बहस नहसियो भंत ।
खत्रवट[13] सँसँद[14] मथे खेड़ेचा, अंत[15] काढियौ अमोलक अंत ॥१॥
सूकर वाय धाय नेता रस, भारी रायतणा[16] भारात ।
रजवट[17] चौमथतै महणा रव, हीरौ मरण चई नौ हात ॥२॥

१—बेटा । २—हानिमिटी । ३—विनासिर का धड़ । ४ - दिशा । ५—और दिन । ६—शिकायत । ७—मालदेवजी का पोता कल्याणसिंह जी । ८—राठौर । ९—मारवाड़ । १०—गढ़ । ११—तलवार । १२—युद्ध । १३—क्षत्रियधर्म । १४ - समुद्र । १५—इत्र । १६—कल्लाजी । १७—क्षत्रिय धर्म यानी युद्ध ।

चंद्रतहास[1] मेर चालव तौ, कला भलाधिन हात सुकृत ।
हद रज धरम तेग हीलोहल, मथ काढियौ अमोल अमृत ॥३॥
हीलोलतै इलोल वैर हर, घटे मही नर माछ घणौ ।
भलो अवध अँतकला भाँजियौ[2], तोटौ मोटौ बाल तणौ ॥४॥

(.)

असमर[3] वार[4] पाडिया ऊठै, वाहै हाथ भाराथ[5] वैरै ।
तो जिम तिकै कहीजै ताता, कला पराक्रम जिके करै ॥१॥
म्रत मुरवार[6] धरण गै माथै, भाँज भाँज साधे भाराथ ।
दलाँ[7] रज्जु[8] रज[9] हवै भाँणादिस, हद जाँणजै वाहै हाथ ॥२॥
मार मरण गाँ धरण मेलिया, घड़ मचँकोड़ै[10] वार घणाँ[11] ।
सूर सधीर सांसंताँ[12] सिरखा, ताय वंदजै[13] रायँसी[14] तणा ॥३॥
कल ऊबरै मरै साकौ करै, असमर खग[15] खेलिये अचड़ ।
रूप कुलोधर[16] सरब रावताँ, धूप खेव नित पूज जै धड़ ॥४॥

१—तलवार। २—तोड़ा । ३—असमर्थ । ४—पीड़ा वश चिल्लाना । ५—झगड़ा । ६—मारवाड़ । ७—फौज । ८—लीन । ९—छिन्न भिन्न । १०—मारापीटा । ११—बहुत । १२—योधाओं के समान १३—कहना । १४—रायसिंह का पुत्र अर्थात कलियान सिंह । १५—तलवार । १६—कुल का धारण करने वाला ।

(३)

मुरधर[१] खंड हाल मन मोरा, विक्रम विपत सहजाय विलै।
परम जोत किलियाँरा परसियाँ, मूरतवँत किलियाँरा मिलै ॥१॥
आलस मकर अमीरा आतम, हेकट पंथ हेकमनै[२] होय।
जगत नरेस्वरं[३] कमल जोवियाँ[४] जंगल सुपहतणौ[५] मुखजोय ॥२॥
जीवरे जेझं[६] मकर तिल जवडी, साठा अखर दलदचा[७] मेट।
मुगत[८] दियरा जलवट रायमलियो, मुगत दियरा थलवट रायमेट ॥३॥
अघ मिटियौ ज्यूँ मिटसी ऊँरात, ध्यान ज्युहीं उर ध्यान धरः।
द्वारमती[९] सुरांपति[१०] दीठौं[११], पेख नरांपत[१२] विक्रमं[१३] परः ॥४॥

(४)

सवियारा किलियाण तरो म्रत, आगै भाटां[१४] असतं[१५] अनान।
आज आयाँ भड़[१६] छौत ऊतरी, श्रोरा गँगोदकं[१७] कियो सिनान ॥१॥
सिर नीमियौ[१८] गंगजल श्रोगी, सिर सीधौ[१९] किलियाँरा सकाज।
असंती[२०] भड़ाँ तरो आभाड़ियौ, अनड़ं[२१] प्रवीतं[२२] हवौ जो आज ॥२॥

१—मारवाड़। २—निश्चिन्त। ३—राजा। ४—देखना। ५—राजा का लड़का। ६—देर। ७—दुविधा। ८—मोक्ष देने वाला। ९—द्वारिका। १०—इन्द्र। ११—दिखलाई दिया। १२—राजा। १३—पराक्रम। १४—पत्थर। १५—अपवित्र। १६—योधा। १७—गंगाजल। १८—डाला। १९—ऊँचा करना। २०—योधाओं के हाड़। २१—शूरवीर। २२—पवित्र।

माल तणा गढ़ सीस मरंताँ, मंजन निलियौ मेल मलः ।
लाखाँ वहै तुवांलौ[1] लोही, जाँणै लाधौ गंग जलः-॥३॥
पाँणी ओण तणौ पाँणेजा[3], पहलूँणौ किलियांण सपोतँ[4] ।
मोटा दुरगँ[5] अणखला माथै, छाड़ाहरै[6] उतारी छोत ॥४॥

(५)

ऊँभो अनड़ महा भड़[8] आडो, वीरतदत्त खत्रवांट[9] बहे ।
पड़िया मुझ पाछे पालटसी, कोट मकर डर कल्लो कहे ॥१॥
रायमलोत कहे रव रावण, मिलियाँ[10] जे घण थाय मिलो ।
भुज साजे ताय कोटन मिलसी, भुजभांजे[11] ताय कोट मिलो ॥२॥
राव राठोर बीच राठोराँ, रिणं[12] रजवांटं[13] भलौ रहियौ ।
सिर साँठै[14] देसूँ[15] सिवियांणो, कल्ले परत पहिलै कहियौ ॥३॥
थठ बैठाय आपणो थाये, घाये सैन घणो घटियो ।
पहिला कल्लो विढे रिण पड़ियो, पाछै अणखलो[16] पालटियो ॥४॥

गीत चारण हुरसाजी ग्राम पाँचेटिये कृत ।

(१)

अनकारे भड़ चढियौ ऊतर, भवस हाथ दे कियौ भलै ।
मोटौ बोल अणखला[16] माथै, कल्ल है ऊँतारियौ[17] कलै ॥१॥

१—तुम्हारा । २—हाथ । ३—प्रथम । ४—जहाज । ५—बड़ागढ़ । ६—छाड़ा जी के वंशज कलियानसिंह । ७—खड़ा । ८—योधा । ९—युद्ध । १०—टूटना । ११—भुजा टूटने पर । १२—कर्ज़ । १३—रजपूती । १४—बदले । १५—दूँगा । १६—सिवाने के क़िले का नाम । १७—उतारा ।

असताँ[1] पहाँ दुरँग[2] आभड़तै, वझौ विलागौ जिका कुवंक ।
जोधाहँरा[3] तुहाँलै[4] जमहर, काजल ऊतारियो कलंक ॥२॥
सुहँड़े[5] चंद तणे समियाणे, कमधे दीधं[6] विशोभा[6] करि ।
सूरज ही ऊजलौ सुसोभित, माल कुलोधरँ[7] कीयौ मरि ॥३॥
लाखाउटै जिकाँ[8] मिस लागी, दलँ[9] ऊतरतै धरम दुआर ।
अणकलँ[10] चढे भली ऊतारी, सूजाँ[11] हरै जमारै सार ॥४॥

(२)

हेवै सार न सार हिंदुआँ, किरमँरँ[12] साख संसार कहै ।
पिंड पाँच मुख अने पखरियौ, रावकलौन गिरद रहै ॥ १॥
साहै साहनकूँ सम जतियाँ, जोवै वाटँ[13] करे वा जंग ।
जूह विडाँर[14] अनेवय जूसण, गोरँभ[15] अनें अभँनिमो[16] गंग ॥२॥
चित्राँ हरवा हुवो विकोहर, घाय मिलै तो मानै घात ।
परठे वलै[17] सार मै पाखर, भनिमौ रायमल दुरँग[18] भराँतँ[19] ॥३॥

१—हाड़ । २—क़िला । ३—जोधा जी का पोता । ४—तुम्हारी तरह । ५—सुभट । ६—दिया । ६—दुचन्द शोभा । ७—कुल का उद्धार ८—जिसका । ९—फ़ौज । १०—अणखीला । ११—सूजा जी का पोता । १२—तलवार । १३—रास्ता देखना । १४—मारना । १५—गौरव । १६—अधीनी करना । १७—फिर । १८—क़िला । १९—युद्ध ।

(१)

रावाँ राव[1] सुजाव[2] रायमल, बिनता छल वहियो सिधवाह[3] ।
वूँदीगढ़ हाड़ाँ[4] बरसाले, राह दुहूँ कटियो रिमराह[5] ॥१॥
सूजाहरा[6] वँशरा[7] सूरज, छोगाळाँ[8] छत्रपतिया छात[9] ।
बाघ मार संसार बखाणों, गंगहराँ[10] गढ़पति बड़गात ॥२॥
सुरजन जाया भोज सारधूं[11], सुत रायमल तणों सिरताज ।
रतन रायमल देवल[12] रहिया, बल[13] इक नाहर फरहर[14] बाज ॥३॥
साकाँ[15]बंध कमध सोलासै, समत[16] अड़ताले* रयणाँ[17] सकाज ।
कँवरां गुरु किलियाण अणाकल[18], साकुर[19] सँघर निपुर[20] सिधसाज ॥४॥

(२)

दलाँ[21] दरबार सारत[22] फिरी दुहूंघां[23],
चूक हूवां[24] चरख[25] आचचांढ़ी[26] ।

१—राजाओं के राजा । २—पुत्र । ३—अचूकशस्त्र । ४—चोहानों की एक शाख । ५—वैरियों के लिये कालस्वरूप । ६—सूजा जी का पोता । ७—वंश का । ८—सुन्दर । ९—छत्र । १०—गाँगाजी का पोता । ११—पुत्री । १२—मंदिर । १३—फिर । १४—घोड़ा । १५—जोहर (पहिले स्त्री बच्चों को मार कर फिर आप भी लड़ाई में मर मिटना) । १६—सम्वत् । १७—पृथ्वी । १८—जबर । १९—घोड़ा । २०—युद्ध में निपुण । २१—फ़ौजों में । २२—शर्त । २३—दोनों तरफ़ । २४—भूल होने पर । २५—तोपों की गाड़ी । २६—हाथ में चढ़ना ।

* किसी २ प्रति में पिंताले भी पाठ है ।

प्रगट कथ[1] राखवा अमर पिथवीपरा[2],
कसै[3] कमर समर प्रतमांजँ[4] काढ़ी ॥१॥
हुवो अति द्रोह दुसहां चमूँ[5] हूँकली[6],
कालगत[7] विछुट वह गयो केवांण[8] ।
विकट थटवीर[9] दुसहां[10] घड़ा बीदरण[11],
कमध रजवट[12] पण सझीयो किलियाण ॥२॥
पाखलां[13] मीर उठियाँ[14] तरस सीस पर,
घाय चूकौ नहीं चूकेर घाय ।
ऊजलीधार[15] पड़ियार सूँ आछंटी[16],
विषम तूटी कवट[17] मारवै राव ॥३॥
जोकिंणी[18] साचचित[19] पाण[20] सत चै जुगे,
पास ढुलियां कमल पछे प्रतमाल ।
जूंवं[21] माधै हुवै दूररां मोत जिम,
किणी काढ़ी नहीं एण कलिकाल ॥४॥

१—प्रतिज्ञा। २—पृथ्वी पर। ३—युद्ध के लिये तैयार होकर। ४—बख़्तर। ५—दूसरों की फ़ौज। ६—चिल्लाई। ७—ततकाल। ८—तलवार। ९—वीरों का समूह। १०—दुश्मन। ११—तोड़ने को। १२—क्षत्रियों की तरह तैयार हुआ। १३—गनीम। १४—चला। १५—स्वच्छधाढ़। १६—चलाना। १७—कवच। १८—जोगिनी। १९—सावधान हो। २०—हाथ। २१—देखना।

(३)

खलां[1] जगायौ जब कला कमधं[2] खिजियौ,
प्रथी पर पारखौ इसौ पूंगौ[3] ।
दिली दल ऊपटे खाग[4] नागी हथां,
एम चकवां मिले सूर[5] ऊगौ ॥१॥
घोर अधरात रां लूंबियां[6] सत्रघणा[7],
मरद मौटी पणै घणौ माणियौ ।
सिरूगिरां तणै सिरर भलल[8] के वांण सज,
बिहँगां[9] जांणियौ अरकं[10] बणियौ ॥२॥
खलां तंडलं[11] किया रुरवा उत खीजियै,
पौहं[12] वसु जातणौ दीह पूगौ ।
जल दुरगमंथारै[13] इतां[14] खगंजलहलै[15],
एमं[16] खगंबीत[17] ग्रहरावं[18] ऊगौ ॥३॥
प्रवांड़ौ[19] पूरियौ कमँध जोधाँपंती[20],
बाढ दीठांथंकां[21] दुजणां[22] बलिया ।

१—वैरियों । २—बिना सिर का धड़ । ३—पहुँचा । ४—तलवार । ५—सूर्य्य । ६—जुटा रहा । ७—वैरियों को मारने वाले । ८—भालके । ९—पक्षियों । १०—सूर्य । ११—तित्तरवित्तर । १२—प्रभात । १३—मस्तक । १४—इधर । १५—चमचमाहट । १६—इस तरह । १७—तलवार चलना । १८—सूर्य । १९—शीघ्र । २०—योधाओं का स्वामी । २१—देखने पर । २२—शत्रु ।

तट दुरँग[1] मथारै त्रजड़त पनेजरै,
सहँ[2] चकां[3] रयणाँ[4] संजोगँ[5] मलियाँ[6] ॥४॥

(४)

दलां[7] जस राखबां प्रथीमल्ल दूसरा,
सारका स्यांमचै काम साजी ।
खाग आफालियौ भलौ साथैखलां[9],
बाघरा सिंघली[10] हाकं[11] बाजी ॥१॥

सदालगँ[12] जासचै काज मोटा सुहड़ँ[13],
औछड़ै[14] नहीं भुज भार आयै ।
बादँ[15] सुरताणाँसूँ[16] बाँध खगँ[17] बाहँतो[18],
रोष करता नहीं वार लायै ॥२॥

कलाँ[19] भांमी भुजाँ[20] तूझँ[21] मोटा कमँध,
खलां किय धूखलां[22] दलां खागै[23] ।
वलां दुहु पलां चाखाल दैरड़ै[24] विहँद[25],
व्रणौ भड़ँ[26] लोटता लालँबागै[27] ॥३॥

१—क़िला । २—पृथ्वी । ३—चकवा । ४—रात्रि । ५—मिलाप । ६—मिला । ७—फौजें । ८—स्वामी के अर्थ चलाई । ९—वैरियों के सिर । १०—सिंह की । ११—शब्द हुआ । १२—हमेशा । १३—योधा । १४—भूले नहीं । १५—विवाद । १६—बादशाह से । १७—तलवार । १८—चलाता । १९—कल्याणसिंह । २०—बड़ी भुजा । २१—तेरे । २२—तितर बितर । २३—तलवारें । २४—खाडा । २५—बहुत । २६—योधा । २७—लाल कपड़े ।

आभै[1] लागै भलौ भार भुज आँवियै[2],
सुणे नीसांणां[3] यह काम सारू।
पाड़[4] खलघणा[5] किलियांण रिणां[6] पोढ़ियौ[7],
मोहपुर[8] अपछरां[9] रावमारूं[10] ॥ ४ ॥

फुटकर दोहे।

कलियो पेरघे[11] आपेरी[12], सीख दिये सारांह।
बधै न ऊमर[13] कायरां, घटै न जूझारांह[14] ॥ १ ॥
कळिये सेषां सूँ करी, अकबर हँदी आल[15]।
रोप्या रायां मालरै[16], पगते रवौ पताल ॥ २ ॥
किला अणखलो[17] यों कहै, आव कलां[18] राठोर।
मो सिर उतरै मेहणूं[19], तो सिर बँधे मोड़[20] ॥ ३ ॥
कलो भलां गायड़[21] करै, पूरो बेऊ[22] पक्ख।
नानांणो बीजण लखो[23], दादो माल[24] सलक्ख ॥ ४ ॥

१—शोभा। २—आया। ३—नगाड़े का शब्द। ४—मार कर। ५—बहुत से दुश्मन। ६—युद्ध। ७—सोगया। ८—स्वर्ग। ९—अपसरा। १०—मारवाड़ के राव। ११—सभा। १२—अपनी। १३—उम्र। १४—बहादुर। १५—छेड़की। १६—रायमलजी का बेटा। १७—सिवाणे के किले का नाम। १८—कल्याणसिंह। १९—अपजस। २०—तुर्रा जो विवाह के समय सिर पर बांधा जाता है। २१—युद्ध मरोड़। २२—दोनों। २३—लाखाजी। २४—मालदेव।

फौजां सवियाणों फिरैं, अकबर सा असुराणं ।
सोलासै अड़ताळवैं, कियो जंग[२] कल्याण ॥ ५ ॥
सिंह खगां[३] पड़ियो[४] समर, अमर हुवो[५] चहुँ ओड़ ।
तुड़ा मोड़ रायमल तणां[६], रंग घणा राठोड़ ॥ ६ ॥

सोरठा ।

जासी नदी निवाण[८], देवळ[९] ही डिगजावसी[१०] ।
कळ जितरै[११] कल्याण, रहेसी[१२] रायां माळरो[१३] ॥ ७ ॥

महाराज पृथ्वीराज* कृत गीत और कुण्डलियाँ

गीत ।

आये दइव कोपिये[१४] अकबर, ऊतारै अन ऊतर ऊतर ॥
अण चढियां चाढे कुण[१५] अव्वर[१६], गँगहरा[१७] विणनीर गिरव्वर[१८] १५

१—वैरी । २—युद्ध । ३—सिंहपोल पर । ४—लड़ाई में पड़ा । ५—अमर हो गया । ६—रायमल के पुत्र । ७—जावेगी । ८—तलाव । ९—मंदिर । १०—गिर पड़ेंगे । ११—जब तक । १२—रहेगा । १३—मालदेव का । १४—क्रुद्ध हुए । १५—कौन । १६—आकाश । १७—गंगाजी का पोता । १८—पहाड़ ।

* पृथ्वीराज बीकानेर नरेश महाराज रायसिंहजी के भाई थे । इन्होंने जिस प्रकार महाराणा प्रतापसिंहजी के लिये उत्साहवर्द्धक १८ सोरठे लिखे हैं उसी प्रकार राव कल्ला जी की प्रशंसा में आपने कुछ गीत और १४० कुण्डलियां कहीं हैं । पर वे सब मिलती नहीं । उपरोक्त गीत और १७ कुण्डलियाँ श्रीमान् ठाकुर साहब अणदसिंहजी लाडनू राज मारवाड़ के यहां से हमें प्राप्त हुई हैं । पाठक इन्हीं को पढ़कर आपकी ओजभरी कविता का आनन्द लेवें ।

रायमलोतर वदे[1] रीसांणै[2], धुरिया कटक लूंबियां[3] थांणै ।
रूकां[4] मूंह भिड़तै रांणै, सरगा[5] जंळ चाढियो सिवाणै ॥२॥
नड़ियां[6] अनजण[7] आंण न ड़ंतै, धाय अरहरां थाट[8] धड़ंतै ।
खेड़ेचै[9] खनराह खड़ंतै, चढ़ियौ गिरवर नीर चड़ंतै ॥३॥
नव चौकियै महल्ल नासाणी, रापे राख करै नैरांणी[10] ।
कैल्लो[11] मुओ कर अकहै[12] कहांणी, पंव्वै[13] सीस चढ़ावे पांणी ॥४॥

कुण्डलियाँ ॥

[14]थो देवी सच्चा वयण, वाखाणू कल्याण ।
साखां तेरां समधरणं, रूप नवे गढ़राण ॥
रूप राठोर सुरतांणं[16] सल्लै[17] राखणो ।
तेजरा पुंज तुड़तांन[18] रायमल्ल तणो[19] ॥
कुँवर अह बानियां तणा कथ के बही ।
देव पितु मात वाखाणं सबदे बही ॥१॥
लंबोदरं[21] पाये लगूं, विद्या करौ पसाय ।
कूँवर वाखाणू कल्लो, रांणौ खंडे राय ॥

१—कह कर । २—क्रोधित हुए । ३—जाजुटे । ४—तलवार । ५—स्वर्ग । ६—नदियां । ७—दुश्मन । ८—समूह । ९—राठोर । १०—सफाई । ११—कल्याणसिंह । १२—अकथ । १३—पर्वत । १४—दो । १५—युद्ध का समुद्र । १६—बादशाह । १७ दुश्मनी । १८—तुरकों को । १९—पुत्र । २०—वर्णन । २१—गनेश जी । २२—वर्णन करूं ।

रांण बाखांण अवतार धन राठवड़ ।
ओधरणा[1] जोधहर सरे मांडी अनड़[2] ॥
मझ रतन ऊपजे एहड़ा[3] सुरधरा[4] ।
देव गुण प्रसन म्है मैंने[5] लंबोदरा ॥२॥

नानांणो[6] बीजड़[7] लखो, दादो माल सलक्ख ।
कल्लो भल्ला गायड़[8] करै, बेउ[9] पखाचल रक्ख ॥
छलवड़ां राखबा[10] दीपियो[11] चोउंतर[12] ।
हमें अकब्बर कहे अंगजी जोधहर[13] ॥
कल्लो गंगेव[14] घर हुवो अचड़ां करण[15] ।
पितापख[16] मालदे मात पख लिछमण ॥३॥

कल्ला अणखलो यों कहै, पांधारे[17] परमाण ।
तो बाखाणूं राठवड़, जो आये आपाण[18] ॥
आय आपाण मुझ घणा दिन ऊबैर ।
मुझ सीर नीठियां[19] नास नाहीं मरै ॥

१—उद्धार करने को। २—लड़ाई ठानी। ३—ऐसा। ४—मारवाड़ में। ५—मुझको। ६—नानेरा। ७—सिरोही के राजा। ८—युद्ध (मरोड़)। ६—दोनों पक्ष। १०—रखने को। ११—जाहिर हुआ। १२—चारों तरफ। १३—जोधा जी का वंशज। १४—गाँगाजी के घर में। १५—अचल करने वाला। १६—पिता के पक्ष में। १७ सीधे। १८—विक्रम। १६—मरण से।

मांझिया मारवाड़[1] वार अप हामला ।
कहै यूँ अणखेल्लो[3] भलां आया कल्लाँ[4] ॥४॥
कल्लो मरण मँगलीककर चढ़ियो गढ़ सवियांण ।
अकबर शाह बखाणियो राणां खंडे राण ॥
राण बाखाणियो बड़े राई तनाँ ।
दीपियो[5] जोधहर[6] घणो थोरे दिनाँ[7] ॥
भणे[8] संसार जूझार[9] सहको भलो ।
कर मँगलीक सिवियाँण चड़ियो कल्लो ॥५॥
बीटं[10]बल्ली दल्ल चौवल्ली[11], अरपर धके अँगार ।
तू रत्ता[12]गढ़ गेह मे, बाँचा तातो बार
बार तो बाँचतो जसी वाथाँहराँ[13] ।
पेख भारातँ[14] दल्ल पराक्रम आपराँ[15] ॥
खेत चावै नवा तूझँ[16] पाखाँ खलाँ[17] ।
बीटदल्ल बल्ली कर भली होऊ भला ॥६॥

१—मारवाड़ का रक्षक। २—सिवाने के क़िले का नाम । ३—राव कल्लाजी। ४—कल्याणसिंह। ५—चमका। ६—जोधाजी का वंशज। ७—बहुत थोड़े दिन। ८—कहे। ९—बहादुर। १०—घेर लिया। ११—चारों तरफ़ से। १२—आशक्त। १३—झगड़ालू। १४—युद्ध देख कर। १५—आपका १६—तेरा। १७—वैरी।

के जतिया चूका कँवर जूटां[1] जोध जुवाँण ।
राणा सवियाणो कहै कर सांको[2] कल्याण ॥
कहै सवियाण कल्याण साको करै ।
मरद अनड़ा भिड़ा तूझ संडोवरै[3] ॥
खेलिया अखेला आगले खत्रिये ।
कीधँ[4] आलोचगढ़ लीधँके[5] जिंत्तिये[6] ॥७॥
सिंहजू सूतो नींद भर पोहो रेन पडंत ।
है कल्ला लाखां हैणे[7] जे लखणे[8] जागंत ॥
जागियो अरां[9] पर आण जोधा हरो[10] ।
प्रसण घड़ सांसहो सलफियो[11] पांधरो[12] ॥
बींधँ[13] आनंत इम वाहि साबाळवो ।
नहग लागो भलो सिंह निद्रा ळवो ॥८॥
केहर सूतो[14] नींद भर थह बँकी सिवियाण ।
पारधी[15] आय जगाड़ियो[16] करसी जंग[17] कल्याण ॥

१—जुटा । २—जोहर यानी स्त्री आदि को मार कर गढ़ का दरवाज़ा खोल कर निर्भय हो युद्ध करना । ३—जोधापुर की पुरानी राजधानी । ४—किया । ५—लेकर । ६—जीत लिये । ७—मारे । ८—लक्षण । ९—वैरियों पर । १०—जोधाजी का वंशज । ११—कूदना । १२—सीधा । १३—छेदन करना । १४—सोता सिंह । १५—शिकारी । १६—जगाया । १७—युद्ध ।

जाग कर जंग कल्याण जोधापुरा[1]।
आपरी बीर हक चावगढ़ बाँनरा ॥
आपही अपछरा[2] गीधणी ओतैरी[3]।
कल्लिया थाट[4] उपथाट तव केहरी ॥९॥
भुजा निहारे ताँड़ियो सावज[5] बाहर संद[6]।
भाँमी[7] कल्लो माँडियौ मरदाँ सिरै मरंद[8] ॥
मरद मरदाँ सिरैं मारणो माँझियाँ[9]।
समसमा[10] थाट अर लखे घण साथियाँ ॥
कूँतऊ वाँहियाँ[11] कोट माची कलल।
भुज नह भंजे[12] मम त्राड़ियो[13] भुज बलल[14] ॥१०॥
थह सवियाँणों पाकड़े रोस बहो ऊझल[15]।
नौज[16] कलाणों नीसरै[17] साल तणो हे कल्ल ॥
नौज कल्यांण मल हे कलो नीसरै।
कमध बाराह[18] जिम कोट राहा करै ॥

१—जोधाजी का वंशज। २—अप्सरा। ३—प्रगटी। ४—समूह कर लिया। ५—ललकारा। ६—अच्छे प्रकार। ७—बड़े। ८—बड़ा मर्द। ९—मरने में अगुवा। १०—तुल्य समूह। ११—चलाना। १२—तोड़े। १३—ललकारा। १४—भुजाओं के बल। १५—उमड़ कर। १६—नहीं। १७—निकले। १८—सूकर।

नंमिओ[1] नहीं आहेड़ियाँ[2] नीकड़ो ।
पाण धणाँ[3] राण सवियाण थह पाकड़ो ॥११॥

सीहाँ[4] एती आखँड़ी[5] पर मारिया न खाय ।
तीजी फाले[6] न औंपड़ै[7] भागा लार[8] न जाय ॥

जाय किम भागलां लार जोधा हरो ।
खाग[9] झड़ माझियां देव वा तत खरो ॥

बिखाऊँ[10] रीत भड़ै[11] रहण यों हाखड़ी ।
आदरी कलै तणी मारण आखड़ी ॥१२॥

सींहा सस्त्र न जोड़िया हाथाँतणाँ[12] बखांण ।
कलौ कटक्के वींटियौ[13] राण न मेल्हे माँण[14] ॥

माण मेल्हे नहीं राण बेढ़ी मैंणो[15] ।
घणां बोलाबियो[16] जोर दाखै घणो ॥

सिंह सदृश चमूँ[17] नीसरै[18] साथियां ।
हणे मोताहलां कूँत[19] दे हाथियां ॥१३॥

१—झुका नहीं। २—घेरे में से। ३—धन्य। ४—सिंह। ५—घमंड। ६—छलाँग। ७—पकड़े। ८—साथ। ९—तलवार। १०—दुःख। ११—योद्धा। १२—हाथों का। १३—घेर लेना। १४—मान नहीं करता। १५—अग्रेणी। १६—बहुत बुलाया। १७—फ़ौज। १८—निकले। १९—भाला।

हेकल[1] हेड़[2] वियांभिड़े हीय चढ़ाए घाट ।
वाटा ऊबै[3] कुंटरी[4] नहिं भूलो खत्रवाट[5] ॥
बाट भूलो नहीं आंवियो[6] बड़बड़ै ।
छोह वांहां छरा बाजियो लोहड़ै[8] ॥
कलल मुआलै[9] लंकाल माझी कलौ ।
हेकलै हेड़वियं[10] भिड़े अरिथटं[11] भलौ ॥१४॥
अंत्रावलं[12] पाये रुले गले फूल बरमाल ।
कल्याणों साहे कमल करं[13] झाले करमाल ॥
राहे बरमाल आरांणां[14] मुख रांतड़े[15] ।
बिहंडे[16] अरिधड़ां[17] बांण क्रुद्ध बड़बड़े ॥
बाह नीसांण त्रंबाळं[18] सुर काहुळी ।
गळै फूल माळरुल पाय अंत्रावली ॥१५॥
राठवड़ां भंडै[19] बांकंडो[20] रण पोढ़ौ कल्याण ।
कळ कमंध कथ रांखबां[21] सिर दीधो[22] सवियाण ॥

१—दल । २—दोनों भिड़े । ३—रास्ते में खड़ा हुआ । ४—कोण । ५—क्षत्रियोचित मार्ग । ६—आया । ७—ललकारता । ८—शस्त्र बाजे । ९—राव कल्लाजी । १०—दोनों दल । ११—वैरी का समूह । १२—आंतड़ियां पैरों में पड़ी हुई । १३—हाथ में तलवार लिये । १४—युद्ध । १५—लाल । १६—विदारे । १७—वैरियों के धड़ । १८—नौबत । १९—योद्धा । २०—वांका । २१—बात रखने को । २२—दिया ।

ससपे[1] सिरसांटै[2] सावियांण सलखा हरा ।
ऊजलां[3] पूरबजं[4] कीधं[5] तब आपरा[6] ॥
ऊधरणा[7] मालदे राणं[8] राखी अचडं[9] ।
विढे रिण पौढियौ[10] कलौ मड़ राठवड़[11] ॥१६॥
सुरगे[12] हुआ वधारणां[13] नीधसियां[14] नीसांणं[15] ।
सरिर दिधो[16] सावियाण ने यूँ रथ बैठो राणं[17] ॥
रांण बैठो रथे रंभ[18] पूगी[19] रली[20] ।
अँबरे[21] आणंदे[22] हुवा कुसमकली[23] ऊछली ॥
तुझ पाधारियां[24] तुंगे[25] रायमल तणां[26] ।
बजे नीसांण सुरग हुवा बधामरणा[27] ॥१७॥

१—देकर । २—सिरके बदले । ३—उज्वल । ४—वड़ेरों को । ५—किया । ६—अपने । ७—उद्धार करने को । ८—लड़ाई । ९—मज़बूत । १०—युद्ध में सो गया । ११—वीर कल्लाजी राठोर । १२—स्वर्ग । १३—आनन्द । १४—बजे । १५—नक्कारा । १६—शरीर दिया । १७—कल्लाजी । १८—रम्भा । १९—पहुँची । २०—अप्सरा । २१—स्वर्ग । २२—आनन्द । २३—फूल वर्षे । २४—तेरे पधारने से । २५—ऊँचे । २६—रायमल के पुत्र अर्थात कल्लाजी के । २७—आनन्द ।